# सूचना प्रौद्योगिकी का शिक्षा और पुस्तकालय में उपयोग

✍ महिमा जैन

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग कहलाता है। जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया, मानव का ज्ञान और ज्ञान को संचित करने के तरीके उत्तरोत्तर विकसित होते गये। आज के वैज्ञानिक युग में नित नये नये अविष्कार हो रहे हैं। जिनके उपयोग से विभिन्न क्षेत्रों की अनेकानेक सूचनाओं और जानकारियों को अलग-अलग ढ़ंग से संग्रह,आदान-प्रदान, शीघ्र प्रसारण,वितरण, प्रदर्शन,आकलन पुनरार्वतन आदि सम्भव है। इस बीसवीं शताब्दी में ही ग्रामोफोन, आकाशवाणी, ध्वनि लेख यन्त्र (टेपरिकॉर्डर) चल चित्र, दूरदर्शन (टेलीविजन) वीडियों टेप,कम्प्यूटर उपग्रह आदि एक के बाद एक उपकरण तथा आविष्कार हमारे सामने आये। हमारे जीवन के हर क्षेत्र को परिवर्तित कर दिया है। शिक्षा भी इनसे अछूती नही रही, वह भी परिवर्तनों से प्रभावित हो रही है। दूरदर्शन और कम्प्यूटर जैसे अब केवल मनोरंजन या गणना करने तक सीमित नही रहे हैं वे शिक्षा के सशक्त माध्यम भी बन गये हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में जो नवाचार रूपी शैक्षिक तकनीक का प्रयोग हो रहा है तथा जिन नवीन प्रवृत्तियों का आगमन हुआ है उसमें सूचना सामाग्रियों को अन्यन्त बहुमूल्य तथा राष्ट्रीय, आर्थिक, औद्योगिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक विकास एवं उन्नयन के लिए एक आवश्यक संसाधन माना गया है। सूचना को शक्ति की भी संज्ञा दी जाती है। ज्ञानार्जन का प्रथम सोपान सूचना है और ज्ञान मानव के व्यक्तित्व तथा सफलता के लिए आवश्यक आधार तथा वस्तु भी है। सूचना तथा ज्ञान जहाँ कुछ ही व्यक्तियों तथा कुछ ही सीमित पाण्डुलिपियों की पुस्तकों तक सीमित रहे हैं वे आज ज्ञान-विस्फोट, सूचना विस्फोट, सूचना उद्योग, सूचना समाज और सूचना क्रान्ति के रूप में प्रस्फुटित हो रहे हैं।

**सूचना प्रौद्योगिकी-** सूचना तकनीक ऐसा विज्ञान और तकनीकि ज्ञान है जिसकी सहायता से सूचनाओं का संग्रह किया जाता, सूचनाओं को सुरक्षित रखा जाता, सूचनाओं को नियन्त्रित किया जाता, सूचनाओं में सुधार किया जाता है, सूचनाओं का परिकलन (Processing) किया जाता है। सूचनाओं को सम्प्रेषित किया जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी (Information technology) शब्द दो शब्दों के मेल से बना है जहाँ दोनों शब्द अलग-अलग सामान्य अर्थ रखते हैं। यूनेस्को ने सूचना तकनीकि की परिभाषा इन शब्दों में की है- ''सूचनाओं के प्रयोग और परिकलन में प्रयुक्त वैज्ञानिक, तकनीकि, अभियान्त्रिक अनुशासन और प्रबन्धन तकनीकि का उपयोग संगणक तथा अन्य यन्त्रों के

साथ तथा अन्य सम्बद्ध आर्थिक सांस्कृतिक और सामाजिक सामग्रियों के साथ अन्त: क्रिया।[१]''

ग्रेट ब्रिटेन के व्यापार एवं उद्योग विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी को इस प्रकार परिभाषित किया है-''सूक्ष्म इलेक्ट्रोनिक्स पर आधारित कम्प्यूटर एवं दूरसंचार के द्वारा सूचना का अर्जन, प्रक्रियाबद्धकरण, संग्रहण, प्रसार तथा सूचना के स्वरात्मक, चित्रांकित, मूल्य पाठात्मक एवं संख्यात्मक उपयोग को सूचना प्रौद्यौगिकी कहते हैं।[२]''

'सूचना' शब्द का प्रयोग- साधारण जानकारी के लिए, सन्देश ग्रहण करने या पहुचाने के लिए, आँकड़ों का संग्रह करना और उनका आदान-प्रदान।

जैसे यदि हम जानना चाहते हैं कि वारहवीं कक्षा का परिणाम राजस्थान के विभिन्न विद्यालयों में किस प्रकार का रहा है तो यह सूचना प्राप्त करने के लिए हमें विद्यालयों के परीक्षा परिणाम से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने होंगे और उनका सार्थक विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालना होगा। इस दृष्टि से सूचना शब्द की परिभाषा इन शब्दों में की जा सकती है- ''सूचना से अभिप्राय उन आँकड़ों से है जिन्हें किसी निष्कर्ष तक पहुँचाने के लिए काम में लिया जाता है।[३]''

**सूचना तकनीकि के उद्देश्य-**

१. एक ऐसा सूचना तन्त्र विकसित करना जिसमें सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है, सूचनाओं का संग्रह किया जाता है, आवश्यकतानुसार सूचना को उपलब्ध कराया जाता है।

२. सूचना ग्रहण करने वालों को सूचनाएँ समझने और जानने में सहायता प्रदान करना।

३. संग्रहीत सूचनाओं का विश्लेषण और आवश्यकतानुसार व्यवस्थित करने में सहायता प्रदान करना।

४. सूचना प्रयोग करने वालों को इस बात में सहायता प्रदान करना कि वे अपने व्यवहार में उचित परिर्वतन कर सके। समस्या समाधान और निष्कर्ष तक पहुँचने की योग्यता में वृद्धि कर सके।

**सूचना तकनीकि के विभिन्न संचार साधन-** शिक्षा तकनीकि अपने कार्य सम्पादन के लिए विभिन्न माध्यमों का आश्रय लती है, इसकी गणना निम्न प्रकार से की जा सकती है-

१. मुद्रित संचार साधन-पाठ्यपुस्तकों, संदर्भ ग्रन्थों, पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि विद्यालय तथा अन्य सार्वजनिक वाचनालयों से प्राप्त सामग्री।

२. दृश्य-श्रव्य उपकरण- आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र आदि।

३. मौखिक सूचनाएँ- अध्यापकों, विद्यालय सहकर्मियों, सहयोगियों, अभिभावकों, परिजनों तथा समाज के सदस्यों द्वारा प्राप्त औपचारिक तथा अनौपचारिक सूचनाएँ।

**सूचना तकनीकि का उद्‌गम और विकास**- लेखन कला का महत्वपूर्ण कदम था। कागज, स्याही, लेखनी के आविष्कार ने सूचना तकनीकि के क्षेत्र में योगदान दिया। ''जर्मनी के गुटेनवर्ग द्वारा मुद्रण यन्त्र (Printing Press) का आविष्कार हुआ। मुद्रण साधनों ने सूचना तकनीकि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है। सन् १८४९ में इंग्लैण्ड में तथा फ्रांस में छाया चित्र (Photography) का आविष्कार। १९०० में फ्रांस में फोटोस्टेट (Xerox) तकनीक का आविष्कार। १९३८ में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में जीरोग्राफी (Xerography) का आविष्कार।[४]''

इन आविष्कारों के अतिरिक्त दूरसंचार (Telecommunication) तकनीकि के विकास में भी सूचना तकनीकि के विकास में अपूर्व सहायता प्राप्त हुई है। पहले संदेश प्राप्त करने के लिए कबूतरों का प्रयोग होता था। वर्तमान समय में हम उपग्रह संचार (Satellite Communication) सेवा तक पहुँच चुके हैं। संचार माध्यमों के विकास की कहानी इस प्रकार है-

१. १८३७ में संयुक्त राज्य अमेरिका में तार प्रणाली (Telegraphy) ।

२. १८७६ में स्कॉटलैण्डवासी ग्राह्म वेल द्वारा दूरभाष (Telephone) ।

३. १८९५ में इटली में मार्कोनी द्वारा आकाशवाणी (Radio) का आविष्कार।

४. १९२५ में स्कॉटलैण्ड के वेयर्ड द्वारा दूरदर्शन (Television) का आविष्कार।

इन सबकी सहायता से सूचनाओं को एकत्रित करने, संग्रह करने, प्रस्तुत करने और हस्तान्तरण करने के गम्भीर प्रयास प्रारम्भ किये गये। सबसे पहले अमेरिका में सूचना विज्ञान का प्रयोग १९५० में किया गया।

**सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता और शैक्षिक महत्व**- सूचना तकनीकि छात्रों, अध्यापकों, मार्गदर्शकों, शैक्षिक नियोजकों और प्रशासकों, शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी है। शिक्षक नई प्रौद्योगिकी को शिक्षा में शामिल करने के लिए आधारभूत तत्व है। छात्र नई प्रौद्योगिकी को आसानी व प्रभावी तरीके से उपयोग कर सके इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को नई प्रौद्योगिकी का ज्ञान हो तथा उन्हें भी रूचि हो तकनीकि शिक्षा शिक्षकों को शैक्षिणिक कार्यों में सहायता कर सकती है, उन्हें प्रभावी बना सकती है और शिक्षकों को कार्य क्षमता को बढ़ा सकती है। सूचना प्रौद्योगिकी से

यह भी है कि अच्छी शैक्षिणिक सामाग्री अच्छे शिक्षकों से ग्राफ तैयार करवाकर उनकी सी. डी. बना ली जाए जिससे हजारों शिक्षक, लाखों छात्र तथा वो छात्र भी जो कही बाहर हैं अपने अध्ययन कार्यों में उपयोग कर सकतें हैं। छात्र- छात्राओं, अध्यापकों, विद्यालय कर्मचारियों, प्रशासक वर्ग तथा परामर्शदताओं आदि को लाभ पहुँचाने के लिए प्रत्येक विद्यालय में एक सूचना केन्द्र की स्थापना की जानी चाहिए इस सूचना केन्द्र का काम होगा-

१. **सूचनाओं को एकत्रित करना**- ये सूचनाएं, सूचना ग्रहण करने वालों की पहुँच में होना। इन कार्यों के लिए पुस्तकें, पत्र- पत्रिकाएं, न्यूज बुलेटिन आदि। विभिन्न प्रकार के दृश्य-श्रव्य उपकरण और सम्बन्धित सामग्री। कम्प्यूटर, शिक्षण मशीन, माइक्रो फिल्म, ऑडियो टेप, विडियो फिल्म आदि। विद्यालय के सूचना केन्द्र को इन सूचना केन्द्र में प्राय: सूचनाओं का संश्लेषण, विश्लेषण और व्यवस्थित करने की सम्भव व्यवस्था होती है ताकि ये उपयोग हेतु उपलब्ध हो सके।

२. **समृद्ध बनाये रखने के लिए इन नेट प्रणालियों से भी सहायता ली जा सकती है**-

   १. लोकल एरिया नेटवर्क (LAN)
   २. मेट्रोपोलियन एरिया नेटवर्क (MAN)
   ३. वाइड एरिया नेटवर्क (WAN)

सूचना को प्रयोग में लाने वालों को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। सूचना केन्द्र से जो सूचनाएँ प्राप्त हो उन्हें विकसित की जाए। उन्हें यह भली भांति समझ लेना चाहिए कि इस प्रकार की क्षमता की भी एक सीमा होती है। अत: सूचनाओं के भण्डारण, उनके पुन: प्रस्तुतीकरण हेतु किसी व्यवस्थीत सूचना नियन्त्रण प्रणाली का आश्रय लेना चाहिए। पढ़ने, लिखने कम्पयूटर के प्रयोग की योग्यता का विकास किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को वे सब तरीके आने चाहिए जिनके द्वारा सूचनाएँ सरलता और विश्वसनीय ढ़ंग से प्राप्त की जा सकती हे। उदाहरण स्वरूप उन्हें यदि किसी पुस्तकालय से सूचना प्राप्त करनी है तो उन्हें पता होना चाहिए कि पुस्तकालय में पुस्तकों का वर्गीकरण किस प्रकार से किया गया है। इससे पुस्तकें खोजने में उन्हें सरलता होगी और वे पुस्तकालय सम्बन्धी श्रोत से सूचनाओं का संग्रह सम्यक् रूप से कर सकेगें।

**सूचना प्रौद्योगिकी का पुस्तकालय में उपयोग** - पुस्कालय देश की शिक्षण व्यवस्था के हृदय माने जाते हैं जो किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। आज पुस्तकालय मात्र ग्रन्थों का संग्रहण केन्द्र न होकर सूचना के केन्द्र माने जाते हैं। ग्रन्थालय विज्ञान के क्षेत्र में

शिक्षा प्रदान करने हेतु विश्व में सर्वप्रथम दशमलव वर्गीकरण के प्रणेता डॉ. मेंल्विल डीवी के प्रयासों से सन् १८८७ में अमेरिका में कोलम्बिया कॉलेज में प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया जिसका नाम उन्होंने 'स्कूल ऑफ लाइब्रेरी इकोनोमी'' रखा । अमेरिका के बाद इंगलैण्ड दूसरा देश है जहाँ पुस्तकालय शिक्षा का पहला विद्यालय लन्दन में १९२१ में लन्दन स्कूल ऑफ लाइब्रेरियनशिप प्रारम्भ किया गया।

भारत में ग्रन्थालय विज्ञान की शिक्षा का प्रारम्भ सन् १९११ में बड़ौदा में हुआ था। बड़ौदा राज्य के तत्कालीन राजा सियाजी राव गायकवाड़ ग्रन्थ तथा ग्रन्थालय प्रेमी थे उनका मानना था कि ग्रन्थालयों के विकास के बिना शिक्षा का विकास सम्भव नही है। सन् १९०७ में उन्होंने अपने राज्य में प्राइमरी शिक्षा को अनिवार्य घोषित किया तथा इसके साथ ही अपने राज्य की ग्रन्थालय प्रणाली को विकसित करने हेतु अमेरिका से डॉ. मेल्विल डी. वी. के शिष्य ए. वोर्डन को भारत बुलाया।

भारत में विश्वविद्यालय, सरकारी एजेन्सियाँ तथा स्वायत्तशासी महाविद्यालय व्यावसायिक संगठन आदि ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम के विभिन्न स्तरों का संचालन कर रहें हैं। अनेक संस्थान औपचारिक माध्यम से तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय जैसे संस्थान दूर शिक्षा तथा पत्राचार के द्वारा अनौपचारिक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

भारत में ग्रन्थालय शिक्षा विज्ञान की ठोस आधार शिला डॉ. रंगानाथन द्वारा रखी गयी। १९२६ में ग्रन्थालय विज्ञान प्रशिक्षण का कार्य प्रारम्भ किया। उच्च शिक्षा का अध्ययन व अध्यापन सर्वप्रथम १९४८ में दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुआ। सन् १९६४ तक एम. लिव. एवं पी. एच. डी. प्रोग्राम चलाने वाला यह अकेला विश्वविद्यालय रहा था। वर्तमान में लगभग ५० विश्वविद्यालय ग्रन्थालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित कर रहे हैं। इन पाठ्यक्रमों में परम्परागत ग्रन्थालय शिल्प, सूचना विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी जैसे नवीन विषय सम्मिलित किए हुए है। ग्रन्थालयों में कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों को प्रोत्साहन प्रदान करने के उद्देश्यों से सूचना प्रौद्योगिकी को एक प्रश्न पत्र के रूप में अध्ययन का विषय बना दिया गया है।

**भारत में शैक्षिक ग्रन्थालयों के विकास में योगदान करने वाले तत्व**- शिक्षा तथा पुस्तकालय दो जुड़वा बहनें हैं एक को दूसरे से किसी प्रकार अलग नही किया जा सकता। आधुनिक शैक्षिक संरचना का आधार ही पुस्तकालय होते हैं। हमारे देश में

शैक्षिक ग्रन्थालयों की इतनी उत्तम व्यवस्था नही है जितनी की रूस, अमेरिका, इंगलैण्ड, फ्रंस, जर्मनी आदि देशों में है। अत: प्रारम्भ से ही समय-समय पर देश में शैक्षिक ग्रन्थालयों की दशा सुधारने के लिए अनेक आयोग एवं समितियों को गठित किये जाते रहे जो निम्न है-

"(१) हन्टर आयोग सन्-१८८२ में नियुक्त किया गया। इस आयोग ने शिक्षा पद्धति का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि छात्रों की रूचि एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ने में अधिक होती है उनकी रूचि केवल परीक्षा से ही सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ने में बहुत कम रहती है इसलिए स्कूल एवं कॉलेज स्तर पर पुस्तकालय स्थापित करने पर जोर दिया।

(२) भारतीय विश्वविद्यालय आयोग सन्-१९०२

(३) सैडलर आयोग सन्-१९१७

(४)राधाकृष्णन समिति सन्-१९४८

(५)माध्यमिक शिक्षा आयोग सन्- १९५३

(६)विश्विविद्यालय अनुदान आयोग सन्- १९५३

(७)रंगनाथन समिति सन्-१९५७

(८)परामर्शदात्री समिति, सन्- १९५८

(९)कोठारी आयोग, सन्- १९६६"

## सुचना प्रौद्योगिकी के अवयव

१. **सूचना नेटवर्क**- सूचना नेटवर्क सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे प्रमुख अनुप्रयोग है इसे इलेक्ट्रोनिक नेटवर्क से भी जाना जाता है। सूचना नेटवर्क मुख्यत: यन्त्रीकृत क्रियाकलापों से सम्बन्धित होता है जैसे- आदान-प्रदान विधियाँ तथा वाङ्मयात्मक डेटावेस। सूचना के सम्प्रेषण की सुविधा प्रदान करने हेतु कम्प्यूटर एवं दूरसंचार के उपकरणों का उपयोग किया जाता है जो सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से ही सम्भव हो पाया है।

२. **दूरसंचार** सूचना प्रौद्योगिकी का सर्वाधिक अनुप्रयोग सूचना सेवा में दूरसंचार का आता है। दूरसंचार प्रणाली में अधिकतर सूचना के सम्वाहक के रूप में विद्युत्तीय तथा विद्युत-चुम्बकीय माध्यम के द्वारा संचालन किया जाता है। अनेक देशों में अपने संचार तन्त्र को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए सेटेलाइट की स्थापना की है। सूचना को विश्वव्यापी संचार व्यवस्था के लिए इन्टरनेट की स्थापना हो चुकी है।

३. **इन्टरनेट**- आज इन्टरनेट वहुत ही लोकप्रिय होता जा रहा है। इन्टरनेट सूचनाओं को जल्दी और सस्ती दरों पर पहुँचाने का प्रमुख साधन बन गया है। आज इन्टरनेट

महानगरों, नगरों एवं विश्वविद्यालयों के आम जनजीवन का हिस्सा बन चुका है। इंटरनेट ने तो समुद्र की दूरी को पाट दिया है। कई विदेशी विश्वविद्यालयों, विद्यालयों के पुस्तकालय पत्रिकाएँ, जर्नल शोधग्रन्थ एवं लैब की गति विधियाँ ऑन लाइन उपलब्ध है।

४. **ऑनलाइन सेवाएँ**- आज सूचना के ऑनलाइन अभिगम की सुविधा अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है। सूचना सेवा के क्षेत्र में पर्याप्त संख्या में डेटावेसों को ऑनलाइन अभिगम के द्वारा प्रदान किया जाता है।

५. **अर्नेट**- भारत सरकार की इलेक्ट्रोनिक्स विभाग द्वारा १९८६ में नई दिल्ली में इसकी स्थापना की गई । शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में देश का प्रथम एवं महत्वपूर्ण नेटवर्क है, जिसका पूरा नाम 'एजुकेशन एण्ड रिसर्च नेटवर्क है।' क्रियान्वयन एवं संचालन हेतु अर्नेट में निम्न सेवाओं को प्रदान करने का प्रावधान किया हुआ है- इलेक्ट्रोनिक मेल सेवा, फाइल ट्रांसफर सेवा, वाङ्मयात्मक डेटावेस अभिगम सेवा, ऑडियो तथा ऑडियो प्लस सम्मेलन आदि।

६. **इनफ्लिबनेट** - इसका पूरा नाम इनफॉरमेशन एण्ड लाइब्रेरी नेटवर्क है। जिसकी स्थापना यू. जी. सी. के विशेष योजना के रूप में सन् १९९१ में अहमदावाद में की गई। इसका उद्देश्य भारत में सभी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं संस्थानों के ग्रन्थालयों को कम्प्यूटर नेटवर्क के द्वारा जोड़ना रहा था। यह देश के ग्रन्थालयों एवं सूचना केन्द्रों को जोड़ने के लिए कम्प्यूटर सम्प्रेषण नेटवर्क है।

७. **इलैक्ट्रोनिक मुद्रण**- सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव से सूचना का प्रकाशन उद्योग भी प्रभावित हुए बिना नही रहा है। कम्प्यूटरों में टैलीप्रिटर का विकास भी एक अनुप्रयोग है।

८. **सूक्ष्म प्रतिलिपिकरण**- सूचना के संग्रहण एवं पुनः प्राप्ति के अति संवेदनशील यान्त्रिक साधन होते हैं।

देश के विकास एवं प्रगति हेतु शोधरत वैज्ञानिकों को उनकी सूचना निकनेट, डेलनेट, इनफ्लिवनेट, आवश्यकता की तुरन्त पूर्ति हेतु देश एवं विदेशों में डिजीटल ग्रन्थालय, ऑनलाइन कम्प्यूटर लाइब्रेरी सेन्टर, आदि नेटवर्क स्थापित किये गये हैं जो अन्तर ग्रन्थालय ऋण पद्धति द्वारा सभी पुस्तकालयों की एक संघ सूची का निर्माण करते है

जिसके द्वारा किसी भी ग्रन्थालय में बैठकर दूसरी जगह की पुस्तकों ,पत्रिकाओं, शोध पुस्तकों, डिजरटेशन आदि का अवलोकन कर सकते हैं।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सूचना प्रौद्योगिकी भारत का भविष्य है। सूचना तकनीकी एवं इन्टरनेट के वैश्विक परिदृश्य पर नजर दौड़ाने के बाद एक बात दर्पण की तरह साफ होती है कि समाज को गढ़ने में, संवारने में इन्टरनेट, सूचना तकनीकी का बड़ा हाथ है। ग्रन्थालयों अथवा सूचना केन्द्रों में कम्प्यूटरों के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग किये जाने के कारण आज का समाज सूचना समाज को नाम से जाना जा रहा है। इक्कीसवीं सदी को यदि सूचना प्रौद्योगिकी की सदी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी। आज ई विजनेस ई मेल और ई गवनेंस आम शब्द हो गये हैं, इस कड़ी में ई एजुकेशन की बात भी बड़ी जोर शोर से उठाई जाने लगी है। शिक्षा ज्ञान का प्रमुख श्रोत और साधन है अत: शिक्षा के क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ता जा रहा है। उच्च शिक्षा में इसे व्यापक स्तर पर अपनाया जा चुका है। सूचना प्रौद्योगिकी स्वयं शिक्षा का एक अंग बन चुकी है। मानव के प्रत्येक क्रियाकलाप में आज अत्यधिक रूप से यन्त्रों का उपयोग किया जा रहा है इसलिए ग्रन्थालय भी यन्त्रों के प्रभाव एवं अनुप्रयोग से अछूते नही रहे हैं। इस प्रकार शिक्षा एवं पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी व्यापक अवसर प्रदान करती है।

**महिमा जैन**
केन्द्रीय पुस्तकालय
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनूँ -३४१३०६ (राजस्थान)

---

[1] शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ-१५२

[2] ग्रन्थालय एवं सुचना विज्ञान, पृष्ठ-२७८

[3] शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ-१५३

[4] शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ-१५८

[5] ग्रन्थालय एवं सुचना विज्ञान, पृष्ठ-४२०